d{kk & 5

fVIi.kh

17

fo".k|lglukeLrk=&VI

प्रिय शिक्षार्थी, यह पाठ पूर्व पाठ के क्रम में ही है जिसमें आपने विष्णुस्रनामस्तोत्र के श्लोकों तथा उनके अर्थ के विषय में जाना है। इस पाठ में आप आगे के श्लोकों को पढेंगें।

mís';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण कर पाने में; और
- पढ़े गये श्लोकों का अर्थ समझ पानें में ।

17.1 fo".kq lgluke Lrks= & VI

Hkrkoklk oklqno% lokZlqfuy;k·uy% A
niZgk niZnk –Irk nq/kZjk·FkkijkftRk% AA %‰^AA

708 भूतावासः जिनमे सर्व भूत मुख्य रूप से निवास करते हैं

709 वासुदेवः जगत को माया से आच्छादित करते हैं और देव भी हैं

710 सर्वासुनिलयः सम्पूर्ण प्राण जिस जीवरूप आश्रय में लीन हो जाते हैं

711 अनलः जिनकी शक्ति और संपत्ति की समाप्ति नहीं है

712 दर्पहा धर्मविरुद्ध मार्ग में रहने वालों का दर्प नष्ट करते हैं

713 दर्पदः धर्म मार्ग में रहने वालों को दर्प(गर्व) देते हैं

714 दृप्तः अपने आत्मारूप अमृत का आखादन करने के कारण नित्य प्रमुदित रहते हैं

715 दुर्धरः जिन्हे बड़ी कठिनता से धारण किया जा सकता है

716 अथापराजितः जो किसी से पराजित नहीं होते

fo'oefrZegkefrZnhZIrefrZjefrZeku A
vusdefrZj0;ä% 'krefrZ% 'krkuu% AA %‰‰ AA

717 विश्वमूर्तिः विश्व जिनकी मूर्ति है

718 महामूर्तिः   जिनकी मूर्ति बहुत बड़ी है

719 दीप्तमूर्तिः   जिनकी मूर्ति दीप्तमति है

720 अमूर्तिमान्   जिनकी कोई कर्मजन्य मूर्ति नहीं है

721 अनेकमूर्तिः   अवतारों में लोकों का उपकार करने वाली अनेकों मूर्तियां धारण करते हैं

722 अव्यक्तः   जो व्यक्त नहीं होते

723 शतमूर्तिः   जिनकी विकल्पजन्य अनेक मूर्तियां हैं

724 शताननः   जो सैंकड़ों मुख वाले है

,dks uSd% lo% d% fda ;r~ rRineuqÙkee~ A
ykdcU/kqykZdukFkks ek/kok HkäoRly% AA %Š AA

725 एकः   जो सजातीय, विजातीय और बाकी भेदों से शून्य हैं

726 नैकः   जिनके माया से अनेक रूप हैं

727 सवः   वो यज्ञ हैं जिससे सोम निकाला जाता है

728 कः   सुखस्वरूप

729 किम्   जो विचार करने योग्य है

730 यत्   जिनसे सब भूत उत्पन्न होते हैं

731 तत्   जो विस्तार करता है

732 पदमनुत्तमम्   वह पद हैं और उनसे श्रेष्ठ कोई नहीं है इसलिए अनुत्तम भी हैं

733 लोकबन्धुः जिनमे सब लोक बंधे रहते हैं

734 लोकनाथः जो लोकों से याचना किये जाते हैं और उनपर शासन करते हैं

735 माधवः मधुवंश में उत्पन्न होने वाले हैं

736 भक्तवत्सलः जो भक्तों के प्रति स्नेहयुक्त हैं

lo.kо.kk gek³xk ojk³x'pUnuk³xnh A
ohjgk fo"ke% 'kU;k ?k`rk'khjpy'py% AA ‰‹ AA

737 सुवर्णवर्णः जिनका वर्ण सुवर्ण के समान है

738 हेमांगः जिनका शरीर हेम(सुवर्ण) के समान है

739 वरांगः जिनके अंग वर (सुन्दर) हैं

740 चन्दनांगदी जो चंदनों और अंगदों(भुजबन्द) से विभूषित हैं

741 वीरहा धर्म की रक्षा के लिए दैत्यवीरों का हनन करने वाले हैं

742 विषमः जिनके समान कोई नहीं है

743 शून्यः जो समस्त विशेषों से रहित होने के कारण शून्य के समान हैं

744 घृताशी जिनकी आशिष घृत यानी विगलित हैं

745 अचलः जो किसी भी तरह से विचलित नहीं होते

746 चलः जो वायुरूप से चलते हैं

d{kk & 5

fVIi.kh

vekuh ekunks ekU;ks ykdLokeh f=ykd/k`d~ A
l|e/kk e/ktk /kU;% lR;e/kk /kjk/kj% AA Šå AA

747 अमानी — जिन्हे अनात्म वस्तुओं में आत्माभिमान नहीं है

748 मानदः — जो भक्तों को आदर मान देते हैं

749 मान्यः — जो सबके माननीय पूजनीय हैं

750 लोकस्वामी — चौदहों लोकों के स्वामी हैं

751 त्रिलोकधृक् — तीनों लोकों को धारण करने वाले हैं

752 सुमेधा — जिनकी मेधा अर्थात प्रज्ञा सुन्दर है

753 मेधजः — मेध अर्थात यज्ञ में उत्पन्न होने वाले हैं

754 धन्यः — कृतार्थ हैं

755 सत्यमेधः — जिनकी मेधा सत्य है

756 धराधरः — जो अपने सम्पूर्ण अंशों से पृथ्वी को धारण करते हैं

rstko"kk |fr/kj% lo'kL=Hkrka oj% A
çxgks fuxgks 0;xks uSd'k`³xks xnkxt% AA Šf AA

757 तेजोवृषः — आदित्यरूप से सदा तेज की वर्षा करते हैं

758 द्युतिधरः — द्युति को धारण करने वाले हैं

759 सर्वशस्त्रभृतां वरः — समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ

760 प्रग्रहः — भक्तों द्वारा समर्पित किये हुए पुष्पादि ग्रहण करने वाले हैं

761 निग्रहः — अपने अधीन करके सबका निग्रह करते हैं

762 व्यग्रः — जिनका नाश नहीं होता

763 नैकशृंगः — चार सींगवाले हैं

764 गदाग्रजः — मंत्र से पहले ही प्रकट होते हैं

prefr'prckg'pro;g'prxfr% A
prjkRek prHkko'pronfondikr~ AA Š„ AA

765 चतुर्मूर्तिः — जिनकी चार मूर्तियां हैं

766 चतुर्बाहुः — जिनकी चार भुजाएं हैं

767 चतुर्व्यूहः — जिनके चार व्यूह हैं

768 चतुर्गतिः — जिनके चार आश्रम और चार वर्णों की गति है

769 चतुरात्मा — राग द्वेष से रहित जिनका मन चतुर है

770 चतुर्भावः — जिनसे धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष पैदा होते हैं

771 चतुर्वेदविद् — चारों वेदों को जानने वाले

772 एकपात् — जिनका एक पाद है

lekorks·fuo`ÙkkRek nqtZ;ks nqjfrØe% A
nqyZHkks nqxZeks nqxksZ nqjkoklks nqjkfjgk AA Š… AA

773 समावर्तः संसार चक्र को भली प्रकार घुमाने वाले हैं

774 निवृत्तात्मा जिनका मन विषयों से निवृत्त है

775 दुर्जयः जो किसी से जीते नहीं जा सकते

776 दुरतिक्रमः जिनकी आज्ञा का उल्लंघन सूर्यादि भी नहीं कर सकते

777 दुर्लभः दुर्लभ भक्ति से प्राप्त होने वाले हैं

778 दुर्गमः कठिनता से जाने जाते हैं

779 दुर्गः कई विघ्नों से आहत हुए पुरुषों द्वारा कठिनता से प्राप्त किये जाते हैं

780 दुरावासः जिन्हे बड़ी कठिनता से चित्त में बसाया जाता है

781 दुरारिहा दुष्ट मार्ग में चलने वालों को मारते हैं

'kqHkk³xks ykdlkj³x% lqrUrqLrUroZ/kZu% A
bUædekZ egkdekZ —rdekZ —rkxe% AA Š† AA

782 शुभांगः सुन्दर अंगों से ध्यान किये जाते हैं

783 लोकसारंगः लोकों के सार हैं

784 सुतन्तुः जिनका तंतु – यह विस्तृत जगत सुन्दर हैं

785 तन्तुवर्धनः उसी तंतु को बढ़ाते या काटते हैं

786 इन्द्रकर्मा जिनका कर्म इंद्र के कर्म के समान ही है

787 महाकर्मा जिनके कर्म महान हैं

788 कृतकर्मा जिन्होंने धर्म रूप कर्म किया है

789 कृतागमः जिन्होंने वेदरूप आगम बनाया है

mnHko% lqUnj% lqUnk jRuukHk% lqykspu% A
vdk oktlu% 'k³xh t;Ur% lofoTt;h AA Š‡ AA

790 उद्भवः जिनका जन्म नहीं होता

791 सुन्दरः विश्व से बढ़कर सौभाग्यशाली

792 सुन्दः शुभ उंदन (आर्द्रभाव) करते हैं

793 रत्ननाभः जिनकी नाभि रत्न के समान सुन्दर है

794 सुलोचनः जिनके लोचन सुन्दर हैं

795 अर्कः ब्रह्मा आदि पूजनीयों के भी पूजनीय हैं

796 वाजसनः याचकों को वाज(अन्न) देते हैं

797 शृंगी प्रलय समुद्र में सींगवाले मत्स्यविशेष का रूप धारण करने वाले हैं

798 जयन्तः शत्रुओं को अतिशय से जीतने वाले हैं

799 सर्वविज्जयी जो सर्ववित हैं और जयी हैं

d{kk & 5

fVIi.kh

lqo.kZfcUnqj{kkH;% lokZxh'oj'oj% A
egkºnks egkxrksZ egkHkwrks egkfuf/k% AA Š^ AA

800 सुवर्णबिन्दुः जिनके अवयव सुवर्ण के समान हैं

801 अक्षोभ्यः जो राग द्वेषादि और देवशत्रुओं से क्षोभित नहीं होते

802 सर्ववागीश्वरेश्वरः ब्रह्मादि समस्त वागीश्वरों के भी इश्वर हैं

803 महाह्रदः एक बड़े सरोवर समान हैं

804 महागर्तः जिनकी माया गर्त (गड्ढे) के समान दुस्तर है

805 महाभूतः तीनों काल से अनवच्छिन्न (विभाग रहित) स्वरुप हैं

806 महानिधिः जो महान हैं और निधि भी हैं

dqeqn% dqUnj% dqUn% itZU;% ikouks·fuy% A
verka'kks·e`roiq% loZK% lorkseq[k% AA Š‰ AA

807 कुमुदः कु (पृथ्वी) को उसका भार उतारते हुए मोदित करते हैं

808 कुन्दरः कुंद पुष्प के समान शुद्ध फल देते हैं

809 कुन्दः कुंद के समान सुन्दर अंगवाले हैं

810 पर्जन्यः पर्जन्य (मेघ) के समान कामनाओं को वर्षा करने वाले हैं

fVIi.kh

811 पावनः स्मरणमात्र से पवित्र करने वाले हैं

812 अनिलः जो इल (प्रेरणा करने वाला) से रहित हैं

813 अमृतांशः अमृत का भोग करने वाले हैं

814 अमृतवपुः जिनका शरीर मरण से रहित है

815 सर्वज्ञः जो सब कुछ जानते हैं

816 सर्वतोमुखः सब ओर नेत्र, शिर और मुख वाले हैं

lqyHk% lqozr% fl)% 'k=ftPN=qrkiu% A
U;xzks/kks·nqEcjks·'oRFk'pk.kwjkU/kzfu"kwnu% AA ŠŠ AA

817 सुलभः केवल समर्पित भक्ति से सुखपूर्वक मिल जाने वाले हैं

818 सुव्रतः जो सुन्दर व्रत(भोजन) करते हैं

819 सिद्धः जिनकी सिद्धि दूसरे के अधीन नहीं है

820 शत्रुजित् देवताओं के शत्रुओं को जीतने वाले हैं

821 शत्रुतापनः देवताओं के शत्रुओं को तपानेवाले हैं

822 न्यग्रोधः जो नीचे की ओर उगते हैं और सबके ऊपर विराजमान हैं

823 उदुम्बरः अम्बर से भी ऊपर हैं

824 अश्वत्थः श्व अर्थात कल भी रहनेवाला नहीं है

825 चाणूरान्ध्रनिषूदनः चाणूर नामक अन्ध्र जाति के वीर को मारने वाले हैं

lglzkfpZ% lIrftºo% lIr/kk% lIrokgu% A
vewfrZju?kks·fpUR;ks Hk;—nHk;uk'ku% AA Š‹ AA

826 सहस्रार्चिः जिनकी सहस्र अर्चियाँ (किरणें) हैं

827 सप्तजिह्वः उनकी अग्निरूपी सात जिह्वाएँ हैं

828 सप्तैधाः जिनकी सात ऐधाएँ हैं अर्थात दीप्तियाँ हैं

829 सप्तवाहनः सात घोड़े(सूर्यरूप) जिनके वाहन हैं

830 अमूर्तिः जो मूर्तिहीन हैं

831 अनघः जिनमे अघ(दुःख) या पाप नहीं है

832 अचिन्त्यः सब प्रमाणों के अविषय हैं

833 भयकृत् भक्तों का भय काटने वाले हैं

834 भयनाशनः धर्म का पालन करने वालों का भय नष्ट करने वाले हैं

v.kqcZgR—'k% LFkwyks x.kHk`fUuxqZ.kks egku~ A
v/k`r% Lo/k`r% LokL;% çkXoa'kks oa'ko/kZu%AA ‹å AA

835 अणुः जो अत्यंत सूक्ष्म हैं

836 बृहत् जो महान से भी अत्यंत महान हैं

837 कृशः जो अस्थूल हैं

838 स्थूलः जो सर्वात्मक हैं

839 गुणभृत् जो सत्व, रज और तम गुणों के अधिष्ठाता हैं

840 निर्गुणः जिनमे गुणों का अभाव है

841 महान् जो अंग, शब्द, शरीर और स्पर्श से रहित हैं और महान हैं

842 अधृतः जो किसी से भी धारण नहीं किये जाते

843 स्वधृतः जो स्वयं अपने आपसे ही धारण किये जाते हैं

844 स्वास्यः जिनका ताम्रवर्ण मुख अत्यंत सुन्दर है

845 प्राग्वंशः जिनका वंश सबसे पहले हुआ है

846 वंशवर्धनः अपने वंशरूप प्रपंच को बढ़ाने अथवा नष्ट करने वाले हैं

HkkjHk`r dfFkrks ;kxh ;kxh'kk lodkens A
vkJe Je.k {kke lqi.kkZ ok;qokgu AA ‹f AA

847 भारभृत् अनंतादिरूप से पृथ्वी का भार उठाने वाले हैं

848 कथितः सम्पूर्ण वेदों में जिनका कथन है

849 योगी योग ज्ञान को कहते हैं उसी से प्राप्त होने वाले हैं

850 योगीशः जो अंतरायरहित हैं

851 सर्वकामदः जो सब कामनाएं देते हैं

852 आश्रमः जो समस्त भटकते हुए पुरुषों के लिए आश्रम के समान हैं

853 श्रमणः जो समस्त अविवेकियों को संतप्त करते हैं

854 क्षामः जो सम्पूर्ण प्रजा को क्षाम अर्थात क्षीण करते हैं

855 सुपर्णः जो संसारवृक्षरूप हैं और जिनके छंद रूप सुन्दर पत्ते हैं

856 वायुवाहनः जिनके भय से वायु चलती है

/kuq/kZjks /kuqosZnks n.Mks nef;rk ne% A
vijkftr% loZlgks fu;Urk·fu;eks·;e% AA ‹„ AA

857 धनुर्धरः जिन्होंने राम के रूप में महान धनुष धारण किया था

858 धनुर्वेदः जो दशरथकुमार धनुर्वेद जानते हैं

859 दण्डः जो दमन करनेवालों के लिए दंड हैं

860 दमयिता जो यम और राजा के रूप में प्रजा का दमन करते हैं

861 दमः दण्डकार्य और उसका फल दम

862 अपराजितः जो शत्रुओं से पराजित नहीं होते

863 सर्वसहः समस्त कर्मों में समर्थ हैं

864 अनियन्ता सबको अपने अपने कार्य में नियुक्त करते हैं

865 नियमः जिनके लिए कोई नियम नहीं है

866 अयमः जिनके लिए कोई यम अर्थात मृत्यु नहीं है

lÙooku~ lkfÙod% lR;% lR;/keZijk;.k% A
vfHkçk;% fç;kgksZ·g% fç;—r~ çhfro/kZu% AA ‹… AA

867 सत्त्ववान् जिनमे शूरता–पराक्रम आदि सत्व हैं

868 सात्त्विकः जिनमे सत्वगुण प्रधानता से स्थित है

869 सत्यः सभी चीनों में साधू हैं

870 सत्यधर्मपरायणः जो सत्य हैं और धर्मपरायण भी हैं

871 अभिप्रायः प्रलय के समय संसार जिनके सम्मुख जाता है

872 प्रियार्हः जो प्रिय ईष्ट वस्तु निवेदन करने योग्य है

873 अर्हः जो पूजा के साधनों से पूजनीय हैं

874 प्रियकृत् जो स्तुतिआदि के द्वारा भजने वालों का प्रिय करते हैं

875 प्रीतिवर्धनः जो भजने वालों की प्रीति भी बढ़ाते हैं

fogk;lxfr T;ksfr% l#fpgZqrHkqfXoHkq% A
jfofojkspu% lw;Z% lfork jfoykspu% AA ‹† AA

876 विहायसगतिः जिनकी गति अर्थात आश्रय आकाश है

877 ज्योतिः जो स्वयं ही प्रकाशित होते हैं

878 सुरुचिः जिनकी रुचि सुन्दर है

879 हुतभुक् जो यज्ञ की आहुतियों को भोगते हैं

880 विभुः जो सर्वत्र वर्तमान हैं और तीनों लोकों के प्रभु हैं

881 रविः जो रसों को ग्रहण करते हैं

882 विरोचनः जो विविध प्रकार से सुशोभित होते हैं

883 सूर्यः जो श्री(शोभा) को जन्म देते हैं

884 सविता सम्पूर्ण जगत का प्रसव(उत्पत्ति) करने वाले हैं

885 रविलोचनः रवि जिनका लोचन अर्थात नेत्र हैं

vuUrks grHkqXHkksäk lq[kns uSdtks·xzt% A
vfufoZ..k% lnke"khZ ykdkf/k"Bkuens Hkqr% AA ‹‡ AA

886 अनन्तः जिनमे नित्य, सर्वगत और देशकालपरिच्छेद का अभाव है

887 हुतभुक् जो हवन किये हुए को भोगते हैं

888 भोक्ता जो जगत का पालन करते हैं

889 सुखदः जो भक्तों को मोक्षरूप सुख देते हैं

890 नैकजः जो धर्मरक्षा के लिए बारबार जन्म लेते हैं

891 अग्रजः जो सबसे आगे उत्पन्न होता है

892 अनिर्विण्णः जिन्हे सर्वकामनाएँ प्राप्त होनेकारण अप्राप्ति का खेद नहीं है

893 सदामर्षी साधुओं को अपने सम्मुख क्षमा करते हैं

894 लोकाधिष्ठानम् जिनके आश्रय से तीनों लोक स्थित हैं

895 अद्भुतः जो अपने स्वरुप, शक्ति, व्यापार और कार्य में अद्भुत है

lukRlukrure% dfiy% dfij0;;% A
LofLrn% LofLr—RLofLr LofLrHkqDLofLrnf{k.k% AA <^ AA

896 सनात् काल भी जिनका एक विकल्प ही है

897 सनातनतमः जो ब्रह्मादि सनतानों से भी अत्यंत सनातन हैं

898 कपिलः बडवानलरूप में जिनका वर्ण कपिल है

899 कपिः जो सूर्यरूप में जल को अपनी किरणों से पीते हैं

900 अव्ययः प्रलयकाल में जगत में विलीन होते हैं

901 स्वस्तिदः भक्तों को स्वस्ति अर्थात मंगल देते हैं

902 स्वस्तिकृत् जो स्वस्ति ही करते हैं

903 स्वस्ति — जो परमानन्दस्वरूप हैं

904 स्वस्तिभुक् — जो स्वस्ति भोगते हैं और भक्तों की स्वस्ति की रक्षा करते हैं

905 स्वस्तिदक्षिणः — जो स्वस्ति करने में समर्थ हैं

vjkSæ% dq.Myh pØh foØE;ftZr'kklu% A
'kCnkfrx% 'kCnlg% f'kf'kj% 'koZjhdj% AA ‹‰ AA

906 अरौद्रः — कर्म, राग और कोप जिनमे ये तीनों रौद्र नहीं हैं

907 कुण्डली — सूर्यमण्डल के समान कुण्डल धारण किये हुए हैं

908 चक्री — सम्पूर्ण लोकों की रक्षा के लिए मनस्तत्त्वरूप सुदर्शन चक्र धारण किया है

909 विक्रमी — जिनका डग तथा शूरवीरता समस्त पुरुषों से विलक्षण है

910 ऊर्जितशासनः — जिनका श्रुति–स्मृतिस्वरूप शासन अत्यंत उत्कृष्ट है

911 शब्दातिगः — जो शब्द से कहे नहीं जा सकते

912 शब्दसहः — समस्त वेद तात्पर्यरूप से जिनका वर्णन करते हैं

913 शिशिरः — जो तापत्रय से तपे हुओं के लिए विश्राम का स्थान हैं

914 शर्वरीकरः — ज्ञानी–अज्ञानी दोनों की शर्वरीयों (रात्रि) के करने वाले हैं

fVIi.kh

vØ|j% i|'kyks n{kks nf{k.k% {kfe.kkoj% A
fo}Ùkeks ohrHk;% i|.;Jo.kdhr|u% AA ‹Š AA

915 अक्रूरः जिनमे क्रूरता नहीं है

916 पेशलः जो कर्म, मन, वाणी और शरीर से सुन्दर हैं

917 दक्षः बढ़ा–चढ़ा, शक्तिमान तथा शीघ्र कार्य करने वाला ये तीनों दक्ष जिनमे है

918 दक्षिणः जो सब ओर जाते हैं और सबको मारते हैं

919 क्षमिणांवरः जो क्षमा करने वाले योगियों आदि में श्रेष्ठ हैं

920 विद्वत्तमः जिन्हे सब प्रकार का ज्ञान है और किसी को नहीं है

921 वीतभयः जिनका संसारिकरूप भय बीत(निवृत्त हो) गया है

922 पुण्यश्रवणकीर्तनः जिनका श्रवण और कीर्तन पुण्यकारक है

mÙkkj.kks n|"—frgk i|.;ks n|Loluuk'ku% A
ohjgk j{k.k% lUrks thou% i;|ofLFkr% AA ‹‹ AA

923 उत्तारणः संसार सागर से पार उतारने वाले हैं

924 दुष्कृतिहा पापनाम की दुष्क्रितयों का हनन करने वाले हैं

925 पुण्यः अपनी स्मृतिरूप वाणी से सबको पुण्य का उपदेश देने वाले हैं

926 दुःस्वप्ननाशनः दुःस्वप्नों को नष्ट करने वाले हैं

927 वीरहा संसारियों को मुक्ति देकर उनकी गतियों का हनन करने वाले हैं

928 रक्षणः तीनों लोकों की रक्षा करने वाले हैं

929 सन्तः सन्मार्ग पर चलने वाले संतरूप हैं

930 जीवनः प्राणरूप से समस्त प्रजा को जीवित रखने वाले हैं

931 पर्यवस्थितः विश्व को सब ओर से व्याप्त करके स्थित है

vuUr : ik·uUrJhftreU;qHk;kig% A
prqJk xHkhjkRek fofn'kk O;kfn'kk fn'k% AA ƒåå AA

932 अनन्तरूपः जिनके रूप अनंत हैं

933 अनन्तश्रीः जिनकी श्री अपरिमित है

934 जितमन्युः जिन्होंने मन्यु अर्थात क्रोध को जीता है

935 भयापहः पुरुषों का संस्कारजन्य भय नष्ट करने वाले हैं

936 चतुरश्रः न्याययुक्त

937 गभीरात्मा जिनका मन गंभीर है

938 विदिशः जो विविध प्रकार के फल देते हैं

939 व्यादिशः इन्द्रादि को विविध प्रकार की आज्ञा देने वाले हैं

940 दिशः सबको उनके कर्मों का फल देने वाले हैं

fVIi.kh

vukfnHkwHkqZoks y{ehl~ lqohjks #fpjk³xn% A
tuuks tutUekfnHkhZeks Hkheijkøe% AA fåf AA

941 अनादिः जिनका कोई आदि नहीं है

942 भूर्भूवः भूमि के भी आधार है

943 लक्ष्मीः पृथ्वी की लक्ष्मी अर्थात शोभा हैं

944 सुवीरः जो विविध प्रकार से सुन्दर स्फुरण करते हैं

945 रुचिरांगदः जिनकी अंगद (भुजबन्द) कल्याणस्वरूप हैं

946 जननः जंतुओं को उत्पन्न करने वाले हैं

947 जनजन्मादिः जन्म लेनेवाले जीव की उत्पत्ति के कारण हैं

948 भीमः भय के कारण हैं

949 भीमपराक्रमः जिनका पराक्रम असुरों के भय का कारण होता है

vk/kkjfuy;ks·/kkrk iq"igkl% çtkxj% A
Å/oZx% lRiFkkpkj% çk.kn% ç.ko% i.k% AA få„ AA

950 आधारनिलयः पृथ्वी आदि पंचभूत आधारों के भी आधार है

951 अधाता जिनका कोई धाता(बनाने वाला) नहीं है

952 पुष्पहासः पुष्पों के हास (खिलने) के समान जिनका प्रपंचरूप से विकास होता है

953 प्रजागरः प्रकर्षरूप से जागने वाले हैं

954 ऊर्ध्वगः सबसे ऊपर हैं

955 सत्पथाचारः जो सत्पथ का आचरण करते हैं

956 प्राणदः जो मरे हुओं को जीवित कर सकते हैं

957 प्रणवः जिनके वाचक ऊँ कार का नाम प्रणव है

958 पणः जो व्यवहार करने वाले हैं

çek.ka çk.kfuy;% çk.kHk`Rçk.kthou% A
rÙoa rÙofonsdkRek tUeee`R;qtjkfrx% AA f÷… AA

959 प्रमाणम् जो स्वयं प्रमारूप हैं

960 प्राणनिलयः जिनमे प्राण अर्थात इन्द्रियां लीन होती है

961 प्राणभृत् जो अन्नरूप से प्राणों का पोषण करते हैं

962 प्राणजीवनः प्राण नामक वायु से प्राणियों को जीवित रखते हैं

963 तत्त्वम् तथ्य, अमृत, सत्य ये सब शब्द जिनके वाचक हैं

964 तत्त्वविद् तत्व अर्थात स्वरुप को यथावत जानने वाले हैं

965 एकात्मा जो एक आत्मा हैं

966 जन्ममृत्युजरातिगः जो न जन्म लेते हैं न मरते हैं

HkkHkqo%LoLr#Lrkj% lfork çfirkeg% A
;Kk ;Kifr;ZTok ;Kk³xk ;Kokgu% AA få† AA

967 भूर्भुवःस्वस्तरुः भूःभुवः और स्वः जिनका सार है उनका होमादि करके प्रजा तरती है

968 तारः संसार सागर से तारने वाले हैं

969 सविताः सम्पूर्ण लोक के उत्पन्न करने वाले हैं

970 प्रपितामहः पितामह ब्रह्मा के भी पिता है

971 यज्ञः यज्ञरूप हैं

972 यज्ञपतिः यज्ञों के स्वामी हैं

973 यज्वा जो यजमान रूप से स्थित हैं

974 यज्ञांगः यज्ञ जिनके अंग हैं

975 यज्ञवाहनः फल हेतु यज्ञों का वहन करने वाले हैं

;KHkn~ ;K—n~ ;Kh ;KHkqx~ ;Klk/ku% A
;KkUr—n~ ;Kxqáeeueukn ,o p AA få‡ AA

976 यज्ञभृद् यज्ञ को धारण कर उसकी रक्षा करने वाले हैं

977 यज्ञकृत् जगत के आरम्भ और अंत में यज्ञ करते हैं

978 यज्ञी अपने आराधनात्मक यज्ञों के शेषी हैं

979	यज्ञभुक्	यज्ञ को भोगने वाले हैं
980	यज्ञसाधनः	यज्ञ जिनकी प्राप्ति का साधन है
981	यज्ञान्तकृत्	यज्ञ के फल की प्राप्ति कराने वाले हैं
982	यज्ञगुह्यम्	यज्ञ द्वारा प्राप्त होने वाले
983	अन्नम्	भूतों से खाये जाते हैं
984	अन्नादः	अन्न को खाने वाले हैं

vkRe;kfu% Lo;¥tkrks o[kkul% lkexk;u% A
nsodhuUnu% lz"Vk f{krh'k% ikiuk'ku% AA 98 AA

985	आत्मयोनिः	आत्मा ही योनि है इसलिए वे आत्मयोनि है
986	स्वयंजातः	निमित्त कारण भी वही हैं
987	वैखानः	जिन्होंने वराह रूप धारण करके पृथ्वी को खोदा था
988	सामगायनः	सामगान करने वाले है
989	देवकीनन्दनः	देवकी के पुत्र
990	स्रष्टा	सम्पूर्ण लोकों के रचयिता हैं
991	क्षितीशः	क्षिति अर्थात पृथ्वी के ईश (स्वामी) हैं
992	पापनाशनः	पापों का नाश करने वाले हैं

fVIi.kh

'k³[kHk.uUndh pØh 'kk³xZ/kUok xnk/kj% A
jFkk³xikf.kj{kksH;% lo¢çgj.kk;q/k% AA få‰ AA

993	शंखभृत्	जिन्होंने पांचजन्य नामक शंख धारण किया हुआ है
994	नन्दकी	जिनके पास विद्यामय नामक खडग है
995	चक्री	जिनकी आज्ञा से संसारचक्र चल रहा है
996	शार्ङ्गधन्वा	जिन्होंने शारंग नामक धनुष धारण किया है
997	गदाधरः	जिन्होंने कौमोदकी नामक गदा धारण किया हुआ है
998	रथांगपाणिः	जिनके हाथ में रथांग अर्थात चक्र है
999	अक्षोभ्यः	जिन्हे क्षोभित नहीं किया जा सकता
1000	सर्वप्रहरणायुधः	प्रहार करने वाली सभी वस्तुएं जिनके आयुध हैं

ouekyh xnh 'kk³xh 'k³[kh pØh p uUndh A
Jheku ukjk;.kks fo".kqokZlqnsoks·fHkj{krq AA fåŠ AA

हे भगवान् नारायण हमारी रक्षा कीजिये

वही विष्णु भगवान् जिन्होंने वनमाला पहनी है

जिन्होंने गदा, शंख, खडग और चक्र धारण किया हुआ है

वही विष्णु हैं और वही वासुदेव हैं

Jh oklqnsoks·fHkj{krq Åa ue bfr A

ikBxr i'u& 17-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. भूतावासो ....ण्ण्ण्ण..... सर्वासुनिलयोऽनलः ।
2. .... र्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
3. एको .... सवः कः किं यत् तत्पदमनुत्तमम् ।
4. .... हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
5. अमानी मानदो मान्यो .... त्रिलोकधृक् ।
6. .... श्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
7. .... लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
8. सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः .... ।
9. .... कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
10. .... सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
11. अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो .... महान् ।
12. भारभृत् कथितो योगी .... सर्वकामदः ।

vkius D;k lh[kk

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण करना।
- भगवान विष्णु की विशेषताएं।

ikBkr iz'u

1. नीचे दिये गये पदो का अर्थ लिखिए –

   a) भूतावासो

   b) त्रिलोकधृक्

   c) लोकसारङ्गः

   d) कुन्दरः

   e) अणुर्बृहत्कृशः

   f) सर्वकामदः

mÙkjekyk

17.1

(1) 1. वासुदेवः

2. विश्वमूर्ति

3. नैकः
4. सुवर्णवर्णो
5. लोकस्वामी
6. चतुर्मूर्ति
7. शुभाङ्गो
8. सर्ववागीश्वरेश्वरः
9. कुमुदः
10. सुलभः
11. गुणभृन्निर्गुणो
12. योगीशः